International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(6): 19-21

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(6): 19-21
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 05-09-2018
Accepted: 10-10-2018

अरुण कुमार दीप
शोधार्थी (पीएच्.डी.), संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Correspondence
अरुण कुमार दीप
शोधार्थी (पीएच्.डी.), संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

आचार्य हेमचन्द्र द्वारा वर्णित तद्धित-प्रकरण

अरुण कुमार दीप

प्रस्तावना

तेभ्यः (प्रयोगेभ्यः) हिताः तद्धिताः। तद्धित प्रत्यया को इसलिए तद्धित कहते हैं क्योंकि ये उन प्रयोगों की निष्पत्ति में हितकर अर्थात् सहायक होते हैं तात्पर्य यह है कि इन प्रत्ययों का उपयोग शिष्ट सम्मत इष्ट प्रयोगों की सिद्धि के लिए ही किया जाता है।

जैसे धातुओं से विविध प्रत्यय लाने से अनेक प्रातिपदिकों की निष्पत्ति होती है वैसे प्रतिपादिकों से भी विविध तद्धित प्रत्यय करने पर तद्धितान्त शब्दों की निष्पत्ति होती है। संस्कृत साहित्य का अधिकांश भाग तद्धितों से भरा हुआ है। यथा- लोक से लौकिक, वेद से वैदिक, धर्म से धार्मिक व्याकरण से वैयाकरण आदि।

आचार्य हेमचन्द्र का तद्धित-प्रकरण

सिद्धहैमशब्दानुशासन के छठे एवं सातवें अध्याय (सातवें अध्याय के चतुर्थपाद के अन्तिम कुछ सूत्रों को छोड़कर) में तद्धित प्रत्ययों का प्रतिपादन किया गया है। आचार्य हेमचन्द्र द्वारा वर्णित तद्धित प्रकरण के दोनों अध्यायों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

आचार्य हेमचन्द्र ने षष्ठ अध्याय के प्रथम पाद में तद्धित प्रत्ययों के सन्दर्भ में 'तद्धितोऽणादिः' (6/1/1) पहला प्रतिज्ञा सूत्र का निर्माण किया है जिसमें अणादि वक्ष्यमाण प्रत्ययों को तद्धित माना है। तात्पर्य यह है कि धातु को छोड़कर अन्य प्रकार के शब्दों के आगे जो प्रत्यय लगने से जो शब्द बनते हैं वे तद्धित कहलाते हैं। आचार्य हेम ने उस प्रकार के ही वक्ष्यमाण प्रत्ययों की तद्धित संज्ञा बतलायी है।

तद्धित प्रत्ययों में सर्वप्रथम 'अण्' प्रत्यय आता है पाणिनि ने 'अपत्यमात्र' में अण् प्रत्यय करने के लिए 'तस्यापत्यम्' (4/1/12) सूत्र लिखा है। हेम के सभी सूत्र विशेष रूप से ही आए हुए हैं हेम ने 'अण्' प्रत्यय के अनन्तर 'ज्य' प्रत्यय का नियमन किया है। यह नियम 6/1/15 सूत्र से आरम्भ है। 'बहिषष्टीकण च' (6/1/16) से 'टीकण्' और 'ज्य' प्रत्ययों का नियमन किया है। जिससे 'बाहीकः' और 'बाह्यः' की सिद्धि की गई है पश्चात् 6/1/17 सूत्र के द्वारा 'कलि' और अग्नि शब्दों से 'एयण' प्रत्यय का अनुशासन कर 'कालेयम्' तथा 'आग्नेयम' शब्दों की सिद्धि की गई है। पृथिवी शब्द से 'आ' और 'ञी' प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है। जिससे पार्थिवा और पार्थिवी शब्द सिद्ध होते हैं।

'उत्सादि' शब्दों के लिए 'अञ्' प्रत्यय का विधान कर औत्स तथा औतपातम की सिद्धि की गई है [1] यह 6/1/21 सूत्र द्वारा देव शब्द से 'यञ्' और 'अत्र्' प्रत्ययों का विधान कर 'दैव्ययं' तथा 'दैवम' रूप बतलाया है। [2] स्थाम्न और 'लोम्न' शब्दों से 'अ' प्रत्यय का अनुशासन करके 'अश्वत्थामः' और 'उदुवेलोमा' शब्दों का साधुत्व प्रदर्शित किया है। [3] भव अर्थ में स्त्री और पुम शब्द से 'नञ्' और स्नञ् प्रत्ययों का विधान करके स्त्रैणः तथा पौस्नः उदाहरणों की सिद्धि की है। [4] 'गोः स्वरे यः' [5] सूत्र से य प्रत्यय का विधान कर 'गव्यम्' की सिद्धि की गई है।

पश्चात् अपत्यार्थ में अणादि का विधान करते हुए 'औपगवः' जैसे शब्दों का साधुत्व बताया गया है। 'अत इञ्' (6/1/31) [6] सूत्र से आचार्य हेमचन्द्र ने अपत्यार्थ में अदन्त षष्ठ्यन्त से 'इञ्' का विधान कर दाक्षिः शब्द की सिद्धि करते हैं। इस सूत्र का अनुशासन 6/1/41 [7] सूत्र तक चलता है। 6/1/42 [8] सूत्र से 'यञ्' का नियमन आरम्भ होता है और वह 6/1/45 [9] तक चलता है। इसके अनन्तर ञायन्य् तथा आयनञ् प्रत्ययों का अनुशासन किया है। 6/1/60 [10] सूत्र से अपत्यार्थक 'अण्' का प्रारम्भ होता है और यह प्रकरण 6/1/68 [11] तक चलता है। अनन्तर अपत्यार्थक 'एयण' प्रत्यय का आरम्भ हो जाता है और इसका अनुशासन 6/1/78 [12] सूत्र तक रहता है। अपत्यार्थ में णार, एयञ, एयण, इकण, रोकण, व्य, इय, डेय, णीयण, इय, य, या, इन, अञ, इनञ, इञ, यूनीकण, द्रिरज, द्रिरण प्रत्ययों का विधान किया है। आयन प्रत्यय का नियमन 6/1/108 [13] से आरम्भ होकर 6/1/114 [14] तक चलता रहता है।

षष्ठ अध्याय के द्वितीय पाद में रक्त समूह एवं अवयव विकार आदि अर्थों में तद्धित प्रत्ययों का विधान किया गया है। 'रागादेः रक्तेः' (6/2/1) रज्यते येन कुसुम्भादिनां तदर्थात् तृतीयान्तात् रक्तमित्यर्थे यथाविहितः प्रत्ययः स्यात् अर्थात् इस आरम्भिक सूत्र के द्वारा रक्तादि अर्थों में यथाविहित प्रत्ययों के विधान किया है। रक्तार्थक प्रकरण के अनन्तर कालार्थ में प्रत्ययों का नियमन किया गया है। तथा उसके पश्चात् 6/2/9 [15] से समूहार्थवाची सहित प्रत्ययों का प्रकरण आता है। इसके अनन्तर 'विकारे' 6/2/30 [16] सूत्र के अधिकृत विकारार्थक प्रत्यय आते हैं। तदुपरान्त भ्रातृ अर्थ, दुग्ध अर्थ, राष्ट्र अर्थ, निवासादि अर्थ, चातुर अर्थ, देवता अर्थ, प्रहरण अर्थ, तद्रेति, तद्धीत् अर्थ सामेत्य अर्थ, व्रती अर्थ, भक्ष्य अर्थ एवं अपत्यादि से भिन्न अर्थ में प्रत्ययों का अनुशासन किया गया है।

आचार्य हेमचन्द्र ने तृतीयपाद का प्रारम्भ 'शेषे' [17] सूत्र से किया है जिसका तात्पर्य है अपत्यादि अर्थों से भिन्न प्राग्जातीय अर्थ में वक्ष्यमाण प्रत्यय होते हैं। इस पाद में एयण्, इय्, एत्य्, ईन्, य, एयकञ्, त्यण्, टापनाण्, त्यच, इकण्, अकञ्, अण्, अञ्, इकण्, ईयस्, अकीय, इय्, णिक्, ण्य, य, इय्, म, अ, च, रन् इत्यादि अनेक प्रत्ययों का संग्रह इस पाद में किया गया है। इस पाद में तद्धितीय प्रत्ययों का अनुशासन किया गया है। यह अनुशासन अन्य व्याकरणों के समान ही है।

प्रायः यह देखा जाता है कि इस प्रकरण में एक प्रत्यय करने वाले सभी सूत्र एक साथ नहीं आए हैं। इसका प्रमुख कारण है हेम ने प्रत्ययों की अर्थानुसारिणी रखी है। अर्थात् एक किसी विशेष अर्थ में जितने प्रत्यय आने वाले होते हैं वे सभी प्रत्यय उस अर्थ विशेष में आ जाते हैं। जहाँ पाणिनि आदि आचार्यों ने एक प्रत्ययविधायक सूत्रों को एक साथ रखने की चेष्टा की है वहीं हेम ने एक अर्थ में प्रयुक्त होने वाले प्रत्ययों के विधायक सूत्रों को एक साथ रखने का प्रयास किया है। इसी कारण प्रत्यय विधायक सूत्र एक ही स्थान पर नहीं आ पाये हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने षष्ठ अध्याय के चतुर्थपाद को तद्धित का ही शेष माना है। इस बात की सूचना वह प्रथम सूत्र की वृत्ति में ही दे देते हैं। प्रथम सूत्र की वृत्ति में हेम ने लिखा है- 'आपादान्ताद्यदनुक्तं स्यात् तत्रायमधिकृतो ज्ञेयः' अर्थात् (इकण् 6/4/1) इस पाद का प्रथम सूत्र के जो अर्थ उक्त हो चुके हैं उनसे भिन्न अर्थों में आगे के सूत्रों के द्वारा 'इकण्' प्रत्यय हो जाता है। यथा- संस्कृत अर्थ में 'संस्कृते' (6/4/3) [18] सूत्र से इकण् होने पर दाधिकम् वैधिकम् आदि रूप बनते हैं। बीच में कुछ अपवाद सूत्र भी आते हैं। यथा- 'कुलत्थकोपान्त्यादण्' 6/4/4 [19] सूत्र है। यह सूत्र संस्कृत अर्थ में अण् का भी विधान करता है और कौलत्थम् तैत्तडीकम् आदि शब्दों का साधुत्व उक्त अर्थ बतलाता है।

इसके अनन्तर संसृष्ट [20], तरति [21], चरित [22], जीवति [23], निर्वृत [24], हरति [25], वर्त्तते [26], हनति [27], तिष्ठति [28] गृहणाति, गच्छति, धावति, पृच्छति, समवेत, चरति, शील, प्रहरण, नियुक्त वसति, यजमान, अधीमान, प्राप्त ज्ञेय, दक्षिणा, देय, कार्य शोभमान भूत, भृत, ब्रह्मचर्य, ब्रह्मचारी, चौर, प्रयोजन, मन्थ, दण्ड, प्राप्त, ज्ञात, स्तोम, अर्हति आदि विविध अर्थों में तद्धित प्रत्ययों का अनुशासन किया गया है। प्रत्ययों की दृष्टि से इस पाद में इकण्, अण्, अ, इनण्, इक्, इकट्, इक्, इनञ्, इय्, कण्, ङिन्, ण्, इत्, अञ्, कच्, कइक्, इकट् आदि प्रत्ययों का नियमन किया है।

आचार्य हेमचन्द्र ने सप्तम अध्याय के प्रथम पाद का आरम्भ 'य' प्रत्यय से किया है। पूर्व कहे गये अर्थों के अतिरिक्त जो अर्थ शेष रह गये हैं उन अर्थों में सामान्यतया 'य' प्रत्यय का विधान किया गया है। इयाक्, अवाक् तथा य ये तीनों प्रत्यय अधिकृत होकर चलते हैं। 'वहति रथयुगप्रासङ्गात्' 7/1/2 सूत्र द्वारा द्वितीयान्त से वहत्यर्थ में य प्रत्यय का विधान कर द्विरक्यः, युग्यः आदि सिद्ध किया है। अनन्तर 'एयण्' प्रत्यय का नियमन किया है। आगे के सूत्रों में वृहत्यर्थ में ही विभिन्न शब्दों से ईन, अर्हण, इकण, अण, य और ण प्रत्यय का विधान किया है। इसके अनन्तर तृतीयान्तों [29], पञ्चम्यन्तों [30], षष्ठ्यन्तों[31], सप्तम्यन्तों [32] से य प्रत्यय का अनुशासन किया है। सूत्र 7/1/22 [33] से तदर्थ में य और ण्य प्रत्ययों का अनुशासन किया है। 'कर्ष' [34] तथा 'संगति' [35] अर्थ में य प्रत्यय का विधान किया है। 'तस्मैहिते' 7/1/35[36] सूत्र हित अर्थ का आरम्भ होता है अधिकारोक्त अर्थ में य, थ्य, इनञ, इन, इकण एवं ण प्रत्ययों का प्रतिपादन किया है। परिणामिनि हेतु अर्थ में अञ्, ञ्य, एयण्, प्रत्ययों का नियमन किया है। 'वत्' प्रत्यय का प्रयोग अर्ह, इवार्थ, क्रियार्थ में किया गया है। 7/1/53[37] /54 [38] सूत्रों से सप्तम्यन्त तथा षष्ठ्यन्त इवार्थ से भाव अर्थ में त्व और तल् प्रत्ययों का विधान किया गया है। अनन्तर भाव और कर्म में अर्थ में इयन्, टयण्, य, एयण्, अञ्, अण्, अकञ, इय् एवं त्व प्रत्ययों का विधान किया गया है। 7/1/78 [39] सूत्र से क्षेत्र अर्थ में प्रत्ययों का अनुशासन आरम्भ होता है। इस अर्थ में शाकट् शाकिन, इनञ, इयण, प्रत्ययों का नियमन किया गया है। इसके अनन्तर तिङ्ग अर्थ में [40], व्याप्नोति अर्थ में [41], बद्धेति अर्थ में [42], नेय अर्थ में [43], अत्ति अर्थ में [44] अनुभवति [45], अर्थ में गामिनि [46] तथा स्वार्थ में [47] 'ईन' प्रत्यय का नियमन दिया गया है। इसके पश्चात् संख्यार्थ मानार्थ, श्रद्धा, पारिजात, काम-अर्थ सक्त-अर्थ, स्वाङ-अर्थ, आधूत्-अर्थ, धारिणि-अर्थ, धृत-अर्थ, कारिणि-अर्थ, फल-अर्थ, द्रष्टा-अर्थ एवं वटकादि अर्थ में विभिन्न प्रत्ययों का नियमन किया गया है।

सप्तम अध्याय के द्वितीय पाद में मुख्य वर्ण्य विषय संज्ञा विशेषण बनाना है सर्वप्रथम इस पाद में मतु प्रत्यय आता है। इसके बाद इन्, इक्, अक्, त्, म्, युस्, इल्, आरक, इयस, ल, इल्, ग्मिन्, र, श, न, अण, म, इट्, डुर, दुर, अलु, व, अ, विन, मिन, य, इकण्, चरट्, अञ, तसु, सुच, अत्, स्तात्, अत्, आ, आहि, टिकण, पिञ्ज, पेज,

द्वयसट्, मात्रट, कार, तन्, तल्, तिक् आदि प्रत्ययों का इस पाद में अनुशासन किया गया है।

इस पाद में जहाँ सूत्रों से काम नहीं चला है वहाँ वृत्तियों के आदेशों से काम लिया है। अतः स्पष्ट है कि हेम ने केवल वृत्ति में मात्र सूत्रार्थ को स्पष्ट नहीं किया है बल्कि कई विशेष बातों को भी रखा है।

आचार्य हेमचन्द्र ने सप्तमाध्याय के तृतीय पाद का प्रारम्भ 'मयट्' प्रत्यय से किया है। पाणिनि शास्त्र में सभी अव्यय तथा सर्वनामों में 'टि' के पहले 'अकच्' करना आवश्यक है इसके लिए उन्होंने 'अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक् टेः' [48] सूत्र का विधान किया है। हेम ने उक्त विधान को कुछ विशेषता के साथ बताने के लिए 'त्यादिसर्वादेः स्वरेण्वन्त्यात्पूर्वोडक्' सूत्र बनाये हैं। [49] जहाँ पाणिनि ने 'टच्' आदि सभी समासान्तों को तद्धित मानकर तद्धित कार्य किया है। पर समासान्त प्रकरण में ही स्थान दिया है वहाँ हेम ने समासान्तों को तद्धित प्रकरण में रखकर तद्धित माना है। इस पाद में मुख्य रूप से विभिन्न समासों के बाद जो-जो प्रत्यय आते हैं उन सबका सन्निवेश किया है। यह समासान्त तद्धित प्रकरण 7/3/69 से आरम्भ होकर 7/3/182 सूत्र तक निरन्तर चलता है। यद्यपि इस पाद में कुछ दूसरे प्रकार के प्रत्ययों का भी संग्रह है परन्तु इसमें प्रधानता समासान्त प्रत्ययों की ही है।

सप्तमाध्याय के चतुर्थ पाद में मुख्य रूप से तद्धित प्रत्ययों के आ जाने के बाद स्वर में जो विकृति होती है उसी का निर्देश किया गया है। ञित् (जिस प्रत्यय से ञ हटा हो) अथवा णित् (जिस प्रत्यय से ण हटा हो) तद्धित प्रत्यय के बाद में हो तो पूर्व स्थित नाम के आदिम स्वर की वृद्धि हो जाती है। यथा- दक्ष+इञ = दाक्षि, भृगु+अण= भार्गव इत्यादि।

अनन्तर इसी पाद में कुछ ऐसे सूत्र आते हैं जो अप्रासंगिक हैं अथवा सामान्य सूत्र होने के कारण आरम्भ में रखना चाहिए न कि अन्त में जैसे परिभाषा सूत्र, स्थानिवद्भाव सूत्र, अतिदेश सूत्र जिसका तद्धित प्रकरण में कोई आवश्यकता नहीं है।

सन्दर्भ

1. उत्सादेरञ्। सि.हे.श. 6/1/19
2. देवाद्यञ च। सि.हे.श. 6/1/21
3. अः स्थाम्नः। सि.हे.श. 6/1/22 लोम्नोऽपत्येषु 6/1/23
4. प्राग्वतः स्त्रीपुंसान्नञस्नञ। सि.हे.श. 6/1/25
5. सि.हे.श. 6/1/27
6. अत इञ। सि.हे.श. 6/1/31
7. विदादेर्वृद्धे। सि.हे.श. 6/1/41
8. गर्गादेयञ। सि.हे.श. 6/1/42
9. वतण्डात्। सि.हे.श. 6/1/45
10. शिवादेरण। सि.हे.श. 6/1/60
11. पीलासाल्वामण्डूकाद्वा। सि.हे.श. 6/1/68
12. कुलटाया वा। सि.हे.श. 6/1/72
13. दगुकोशलकर्मारच्छागवृषाद्यादिः। सि.हे.श. 6/1/108
14. राष्ट्रक्षत्रियात्सरूपाद्राजापत्ये ष्ट्रिरञ। 6/1/114
15. षष्ट्याः समूहे। सि.हे.श. 6/2/9
16. सि.हे.श. 6/2/30
17. सि.हे.श. 6/3/1
18. सि.हे.श. 6/4/3
19. सि.हे.श. 6/4/4
20. सि.हे.श. 6/4/6
21. सि.हे.श. 6/4/9
22. सि.हे.श. 6/4/11
23. सि.हे.श. 6/4/15
24. सि.हे.श. 6/4/20
25. सि.हे.श. 6/4/23
26. सि.हे.श. 6/4/27
27. सि.हे.श. 6/4/31
28. सि.हे.श. 6/4/32
29. नौविषेण तार्यवध्ये। सि.हे.श. 7/1/12
30. न्यायार्थादनपेते। सि.हे.श. 7/1/13
31. मतमदस्य करणे। सि.हे.श. 7/1/14
32. तत्र साधौ। सि.हे.श. 7/1/15
33. देवतान्तात्तदर्थे। सि.हे.श. 7/1/22
34. हलस्य कर्षे। सि.हे.श. 7/1/26
35. सीतया संगते। सि.हे.श. 7/1/27
36. सि.हे.श. 7/1/35
37. तत्र। सि.हेश. 7/1/53
38. तस्य। सि.हे.श. 7/1/54
39. शाकटशाकिनौ क्षेत्रे। सि.हे.श. 7/1/78
40. कर्णादेमूले जाहः। सि.हे.श. 7/1/88
41. सर्वोदेः पथ्यङ्मकर्मपत्रपात्रशराबं-व्याप्नोति। सि.हे.श. 7/1/94
42. आप्रदम्। सि.हे.श. 7/1/94
43. अनुपदं बद्धा। सि.हे.श. 7/1/96
44. अयानयं नेयः। सि.हे.श. 7/1/97
45. सर्वान्नमत्ति। सि.हे.श. 7/1/98
46. परोवदीणपरंपरीण पुत्रपौत्रीणम्। सि.हे.श. 7/1/99
47. (क) अषडक्षाशितंग्वललङ्कर्भालंपुरुषादीनः। सि.हे.श. 7/1/106
    (ख) आदिक स्त्रियां वा ऽञ्च। सि.हे.श. 7/1/107
48. अष्टा. 5/3/71
49. सि.हे.श. 7/3/29